हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या - 06

रीतिमुक्त स्वच्छंद काव्य धारा में घनानंद का स्थान

घनानंद रीतिकाल की रीतिमुक्त स्वच्छन्द काव्य धारा के सुप्रसिद्ध कवि हैं। हिन्दी की सम्पूर्ण स्वच्छन्द प्रेम काव्यधारा का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि इस धारा के प्रमुख कवियों में से रसखान, आलम, घनानंद, ठाकुर और बोधा के नाम उल्लेखनीय हैं। ये सभी कवि प्रेम काव्य के प्रमुख प्रणेता हैं और इन्होंने स्वच्छंदता के साथ प्रेमानुभूति का बड़ा ही मर्मस्पर्शी वर्णन किया है परन्तु इनमें से घनानंद सर्वश्रेष्ठ कवि हैं, क्योंकि घनानंद के काव्य में रसखान प्रेम की अनिर्वचनीयता भी है परन्तु इन सबसे बढ़कर घनानंद में कुछ ऐसे असाधारण काव्य सौष्ठव के दर्शन होते हैं जो न रसखान में है न आलम में है, न ठाकुर में है और न बोधा में ही है।

घनानंद ने 'सुजान' को आलम्बन बनाकर अपनी इस लौकिक प्रेयसी के रूप-सौन्दर्य का इतना मार्मिक एवं मनोरंजक वर्णन किया है कि देखते ही बनता है। 'सुजान' की तिरछी चितवन, घूमते कटाक्ष, रसीली हँसी, मृदु-मुस्कान, अरुण होठ, कान्तिमंडित दंतावली, सचिक्कन, केशराशी, बंकिम भौंहें, विशाल नेत्र, गर्वीली मुद्रा, उत्तम यौवन आदि परमुग्ध घनानंद ने उसकी रूप निखार के अनेक संश्लिष्टत्व चित्र

अंकित है जहाँ अपनी प्रेम-विभोरता का परिचय दिया है। वहाँ मुहम्मद शाह रंगीले दरबार की इस नर्तकी के प्रति अपना ऐसा प्रणय-निवेदन किया है जो हिन्दी काव्य की स्थायी सम्पत्ति बन गया है। घनानंद की श्रेष्ठता का सबसे बड़ा कारण यह है कि घनानंद के हृदय में सुजान के प्रति उत्कृष्ट प्रेम एवं असीम आमोह भरा हुआ था, उनके मन में सुजान की अक्षय रूप राशि समाई हुई थी इसीलिए घनानंद का काव्य प्रेम की गूढ़ता से भरा हुआ था, उनके मन में सुजान के अक्षय रूप राशि समाई थी अतृप्ति की अनंतता से भरा हुआ है अन्तर्द्वन्द्व की अलौकिकता से भरा हुआ है।

निःसंदेह वे प्रेम के जितने धनी थे उतने ही भाषा के भी धनी थे और उतने ही अभिव्यंजना के भी धनी थे, इसी कारण हिन्दी काव्य की रीतिमुक्त स्वच्छंद प्रेमधारा में घनानंद का शीर्षस्थान है।

प्रस्तुतकर्त्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो० नं० - 8292271041

दिनांक
12/12/2020